P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-12* March- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

स्वच्छता और गांधी जी के विचारों की प्रसंगिकता

Hygiene and Relevance of Gandhiji's Thoughts

Paper Submission: 02/03/2021, Date of Acceptance: 22/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

शैला परवीन
सह–आचार्य,
समाज कार्य विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

संदीप गिरि
सहायक आचार्य,
समाज कार्य विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

हमने गांधी जी के नेतृत्व में आजादी तो हासिल करली, लेकिन स्वच्छ भारत का उनका सपना आज भी अधूरा है। गांधी जी यह मानते थे कि स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। स्वच्छता की संकल्पना गांधीवादी जीवनचर्या का एक अभिन्न अंग है। उनका सपना सभी के लिए संपूर्ण स्वच्छता को प्राप्त करना था। शारीरिक स्वास्थ्य, आरोग्य और स्वस्थ वातावरण के लिए स्वच्छता सबसे जरूरी घटक है और इस अवधारणा में सार्वजनिक और व्यक्तिगत स्वच्छता दोनो शामिल है। गंदगी और खराब स्वास्थ्य संबंधी स्थितिया विभिन्न बीमारियों के उत्पन्न होने का सबसे महत्वपूर्ण कारण है ये समझना सभी के लिए बहुत आवश्यक है। शोधपत्र में गांधी जी के स्वच्छता सम्बन्धी विचारो और उनके प्रयोगों का विश्लेषण किया गया है ताकि वर्तमान समय में व्यापक स्वच्छता के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास से उनके विचारो की प्रसंगिकता और विचारो को जोड़ा जा सके।

We achieved independence under Gandhiji's leadership, but his dream of a clean India remains unfulfilled even today. Gandhiji believed that cleanliness is more important than independence. The concept of cleanliness is an integral part of the Gandhian way of life. His dream was to achieve complete cleanliness for all. Hygiene is the most important component for physical health, health and a healthy environment, and the concept includes both public and personal hygiene. Dirt and poor health conditions are the most important reason for the occurrence of various diseases. It is very important for everyone to understand. The paper analyzes Gandhiji's views on hygiene and his experiments so that the context and views of his thoughts can be linked to the effort to achieve the goal of comprehensive sanitation in the present times.

मुख्य शब्द : स्वच्छता, गंदगी, स्वास्थ्य, गांधी जी, पेयजल।
Cleanliness, Dirt, Health, Gandhiji, Drinking Water.

प्रस्तावना

स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम की शुरुआत हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के मौके पर एक राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान के रूप में की थी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य शौचालय, ठोस और तरल अपशिष्ट निपटान प्रणाली, गांव की सफाई, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ–सुथरा करना और सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल आपूर्ति सहित हर परिवार को स्वच्छता सम्बन्धी सुविधाएं प्रदान करना है। और इस लक्ष्य को 2019 तक हासिल करना रखा गया ताकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दे सके। गांधी जी जीवन में सवच्छता के बड़े हिमायती थे। सबसे बड़ी बात यह है कि वह सिर्फ बाहरी स्वच्छता के ही पक्षधर नहीं थे, बल्कि मन की स्वच्छता के भी प्रबल पक्षधर थे। आंतरिक स्वच्छता की महत्ता को बापु ने 10 दिसम्बर, 1925 के यंग इंडिया के अंक में कुछ इस प्रकार रेखांकित किया था। ''आंतरिक स्वच्छता पहली वस्तु हैं, जिसे पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य बातें प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण पाठ सम्पन्न होने के बाद लागु की जानी चाहिए।''

गाँधी जी का स्वच्छता का दर्शन काफी व्यापक है जिसमें यह विश्वास प्रकट किया जाता है कि एक पवित्र आत्मा को स्वच्छ शरीर में रहना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि किसी स्थान, शहर, राज्य और देश के लिए स्वच्छ रहना जरूरी होता है। इसमें रहने वाले लोग ईमानदार हों। इन व्यापकता को गांधी जी ने यह कहकर व्यक्त किया कि यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह

स्वस्थ नहीं रह सकता है। यदि वह स्वच्छ नहीं है तो उसके मनोदशा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अर्थात स्वस्थ मन से ही स्वस्थ चरित्र का विकास होगा। महात्मा गांधी ने हमेशा से ही समग्र स्वच्छता की पैरोकारी की और सम्पूर्ण स्वच्छता के लिए इसे आवश्यक बताया। यही कारण है कि उन्होंने न केवल व्यक्ति स्वच्छ पर ही ध्यान नहीं दिया वरन् समग्र रूप से सामाजिक स्वच्छता पर विशेष बल दिया। स्वच्छता जैसी आदत के विकास के लिए किसी भी प्रकार के ऊँच–नीच का भेदभाव नहीं होना चाहिए। स्वच्छता के सन्दर्भ में 25 अप्रैल 1929 के यंग इण्डिया के अंक में बापू की यह टिप्पणी गांधी जी की यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है –

''हम अपने घर से गन्दगी हटाने में विश्वास रखते हैं। परन्तु हम समाज की परवाह किए बगैर इसे गली में फेंकने में भी विश्वास करते हैं, हम व्यक्तिगत रूप से साफ–सुथरे रखते हैं। परन्तु राष्ट्र के समाज के सदस्य के रूप में नहीं जिसमें कोई व्यक्ति एक छोटा सा अंश होता है, यहीं कारण है कि हम अपने घर के द्वार के बाहर इतनी अधिक गन्दगी एवं कूड़ा–कचरा पड़ा हुआ पाते हैं। हमारे आस–पास कोई अजनबी अथवा बाहरी व्यक्ति गन्दगी फैलाने नहीं आते हैं, ये हम ही हैं जो आस–पास रहते हैं। इस गन्दगी को फैलाकर बदहाली की स्थिति पैदा करते हैं। जब हम कूड़े से भरा थैला दरवाजे या खिड़की से फेंकते हैं तब हम खुश हो सकते हैं कि हमारा घर तो साफ हो गया, परन्तु इस बात से दुःखी हो जाते हैं कि हमारा पड़ोस गन्दा हो गया। पास–पड़ोस भी हमारी बस्ती का हिस्सा होता है और कोई भी व्यक्ति इसे जानबूझकर गन्दा करने का काम करता है तो पूरा परिसर गन्दगी का ढ़ेर बन जाएगा। क्योंकि किसी में रहने वाला हर व्यक्ति एक ही प्रकार से व्यवहार करता है और उसे इस बात की कोई चिन्ता नहीं होती कि वह अपने पड़ोस, समुदाय एवं शहर को किस प्रकार गन्दा कर रहा है।''

गांधी जी ने हमें यह सिखाया कि यदि व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ सामाजिक स्वच्छता के प्रति उत्तरदायित्व का बोध नहीं हो तो ऐसी स्वच्छता केवल दिखाबा होकर रह जाएगी।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र में अध्ययन के दो मुख्य है, पहला गांधी जी के लिए स्वच्छता से क्या आशय था और उन्होंने स्वच्छता की संकल्पना को कैसे परिभाषित किया और दूसरा, वर्तमान समय में व्यापक स्वच्छता के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास में उनके विचारो की प्रसंगिगता क्यों और कैसे उपयोगी है ।

सहित्यावलोकन

जोशी और खंतरी (2019) ने गांधी और स्वच्छता पर लिखे शोधपत्र में चर्चा करते हुए कहा कि वह गांधी ही थे जिन्होंने जैव शक्ति के नजरिए से स्वच्छता पर बहस को केंद्रीयता दी । उन्होंने स्वच्छता की पहल को नियंत्रण के प्रकार के रूप में प्रयोग नहीं किया बल्कि इसको जाति आधारित संरचनात्मक पदानुक्रम को बदलने के लिए एक साधन माना था । स्वच्छता पर गांधीवादी विचार मानवविज्ञान की होलिज्म या सवायव की अवधारणा के साथ अच्छी तरह से प्रतिध्वनित होता है उसके लिए स्वच्छता सुधार सामाजिक आत्म की सामूहिक भावना में सुधार महत्वपूर्णआधार हैं । इस प्रकार के सुधार स्वच्छता को 'नैतिक–राजनीतिक' के क्षेत्र में ले जाते हैं जो स्वच्छता को संबोधित करने के लिए राज्य से सामूहिक और नगरपालिका के द्वारा प्रयासों का आह्वान करते हैं । जोशी और खंतरी ने स्वच्छता पर गांधीवादी दर्शन को कई संदर्भों से समझाने की कोशिश की एवं जैव शक्ति, जातिगत पदानुक्रम, उपनिवेशवाद, विज्ञान, राष्ट्रवाद और नैतिकता की अवधारणाओं को गांधीवादी स्वच्छता की अवधारणा को जोड़ कर विश्लेषण किया ।

खरे (2021) ने प्रारंभिक और बीसवीं शताब्दी के मध्य एम के गांधी द्वारा कुछ विषयों और मुद्दों पर लिखे गए चयनित लघु लेख पर चर्चा की है। इस पत्र के द्वारा खरे ने पाया कि गांधी जी ने सत्य और अहिंसा को जीवन का मूल माना था। साथ ही साथ गांधी जी ने भोजन, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर विशेष ज़ोर देते हुए 1940 के दशक के दौरान कई टिप्पणियों की और और रेडियो पर भाषण भी दिए। साथ ही पत्र में इसकी भी चर्चा की है कि इक्कीसवीं सदी के आधुनिक भारतीयो में अभी भी विभिन्न जातियों, धर्मों और क्षेत्रीय सामाजिक आर्थिक असमानताओं में एकता की कमी है और इसके लिए गांधी जी द्वारा सिखायी गयी अनुशासित, नैतिक, सामाजिक और नागरिक जुड़ाव के सिद्धांतो की जरूरत है।

महाजन और महाजन (2021) ने गांधीवादी विचार और मानसिक स्वास्थ्य एक समालोचना शोधपत्र में मानसिक स्वास्थ्य और गांधीवादी विचार की प्रासंगिकता का अध्ययन किया। उन्होंने ने माना कि विभिन्न अवधारणाओं की गहनता से परीक्षण करे तो पायेंगे वे किसी ना किसी रूप से गांधीवादी दर्शन और विचार से सहमती दर्शाते है और यही बात मनोविज्ञान और चिकित्सा विज्ञान की अवधारणाओं पर भी लागू होती है जो गांधीवादी सिद्धांतो के साथ भी सहमती या अनुरूपता प्रस्तुत करती है। आहार, स्वच्छता और व्यायाम के क्षेत्र के अलावा मनोविज्ञान, मानसिक कल्याण और मनोचिकित्सा में गांधी जी के विचार आज भी प्रसंगिगक है और रोजमर्रा के जीवन में व्यक्ति में गांधीवादी सिद्धांतों को को नियमितरूप से प्रयोग कर बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है।

गांधी जी एवं दक्षिण अफ्रिका में स्वच्छता से जुड़े अनुभव

यह दिलचस्प है कि पहली बार गांधी जी ने स्वच्छता के मसले को दक्षिण अफ्रीका में भारतीय व्यापारियों को अपने–अपने व्यापार के स्थानों को साफ रखने के संबंध में उठाया था। गांधी जी और उनके साथ रहने वालों के लिए सफाई के सबक दक्षिण अफ्रीका के फीनिक्स आश्रम में आरंभ हुए। दक्षिण अफ्रीका में जब गाँधी जी ने भारतीयों के साथ नस्लीय भेदभाव के कारण को जानना चाहा तो पाया की जहां भारतीय व्यापारी श्वेत लोगों के द्वारा किए जा रहे दुर्व्यवहार से अपमानित महसूस करते थे, वही वे ही भारतीय व्यापारी अनपढ़ भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के साथ उसी प्रकार का

व्यवहार कर रहे थे क्योंकि ये ग़रीब वर्ग नेटाल बागानों में अर्ध गुलामी की स्थिति में काम कर रहे थे और गंदे आवासों में रहते थे। उन्होंने भारतीय समुदाय से स्वच्छता और छुआछूत पर अपनी सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने की तत्काल जरूरत पर बात की। उन्होंने भारतीय समुदाय से स्वच्छता और छुआछूत पर अपनी सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने की तत्काल जरूरत पर बल दिया तथा स्वच्छता के प्रति उदासीन होने एवं इसके कारण श्वेतलोगो द्वारा किए जा रहे दुस्प्रचार के प्रति आगाह किया।

भारतीय समाज और एशियाई समुदाय की ओर से एक याचिकाकर्ता के रूप में दक्षिण अफ्रीका में दी गई एक याचिका में गांधीजी ने भारतीय व्यापारियों को स्वच्छता के प्रति उनके रवैये और व्यवहार का बचाव किया और उन्होंने सभी समुदायों से सफाई रखने के लिए लगातार अपील भी की थी। गांधीजी भारतीय लोगों की साफ–सफाई कम रखने की आदतों से भी परिचित थे। इसलिए उन्होंने 1914 तक अपने 20 वर्षों के प्रवास के दौरान साफ–सफाई रखने पर विशेष बल दिया। गांधी जी इस बात को समझते थे कि किसी भी इलाके में बहुत अधिक भीड़भाड़ गंदगी की एक मुख्य वजह होती है। दक्षिण अफ्रीका के कुछ शहरों में विशेष इलाकों में भारतीय समुदाय के लोगों को पर्याप्त जगह और ढ़ांचागत सुविधाएं नहीं मुहैया कराई गई थीं। गांधीजी मानते थे कि उचित स्थान, मूलभूत और ढांचागत सुविधाएं और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी नगरपालिका की है। गांधीजी ने इस संबंध में जोहांसबर्ग के चिकित्सा अधिकारी को एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने पत्र में लिखा था–

'मैं आपको भारतीयों के रहने वाले इलाकों की स्तब्ध कर देने वाली स्थिति के बारे में लिख रहा हूँ। एक कमरे में कई लोग एक साथ इस तरह ठूंस कर रहते हैं कि उनके बारे में बताना भी मुश्किल है। इन इलाकों में सफाई सेवाएं अनियमित हैं और सफाई न रखने के संबंध में बहुत से निवासियों ने मेरे कार्यालय में शिकायत करके बताया है कि अब स्थिति पहले से भी बदतर हो गई है।' (गांधी वाङ्गमय, भाग–4, पृष्ठ 129)

गांधी जी के भारत में स्वच्छता प्रयास

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद दो वर्ष तक पूरे देश की यात्रा करते हुए गांधी जी ने यह महसूस किया कि सफाई और सामाजिक स्वच्छता बड़ी और अजेय समस्या है और यह माना कि सिर्फ़ सफ़ाई और स्वच्छता जानकारी का अभाव ही इसका इकलौता कारण नहीं था बल्कि लोगों कि वह मानसिकता भी इसका एक कारण थी, जो लोगों को स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर इसके गंभीर दुस्प्रभाव के बारे में सोचने से रोकती थी।

दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने श्वेतलोगो के इस आरोप को स्वीकार किया कि भारतीयों को सफाई और स्वच्छता से दिक्कत है, लेकिन उन्होंने इसका विरोध करते हुए यह बात सफलता पूर्वक सामने रखी कि रंग को लेकर पूर्वाग्रह और प्रतिस्पर्धा का खतरा ही भेदभाव का मुख्य कारण है। गांधी जी 1909 में हिन्द स्वराज लिख चुके थे। स्वशासन के रूप में ग्राम स्वराज और हिन्द स्वराज की उनकी योजना में देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए लड़ना दो अलग बात नहीं हो सकती थी । बाद में इसे आश्रम के अनुपालन और रचनात्मक कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस सफाई एवं स्वच्छता तथा छुआछूत दूर करना दो बड़े रचनात्मक कार्यक्रम हो गये।

गांधी जी और उनके साथियों के सामने देश में ग्रामीणों के बीच सफाई और स्वच्छता की समस्या की गम्भीरता तब स्पष्ट हो गयी, जब उन्होंने चम्पारण के गांवों में सफाई की ख़राब स्थिति को देखा। गांधी जी को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वहाँ पर भूमिहीन श्रमिक परिवार भी अपना मैला खुद उठाने को तैयार नहीं थे। चंपारण के दल में गांधी जी के साथ शामिल हुए लोगों ने नियमित रूप से सड़कों और मैदानों में झाड़ू लगाई, कुएं साफ किये और तालाब भरे। धीरे–धीरे गांव की सफाई के मामले में आत्मनिर्भरता का वातावरण तैयार होने लगा। भारत में गांधी जी ने गांव की स्वच्छता के सन्दर्भ में सार्वजनिक रूप से पहला भाषण 14 फरवरी 1916 में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। उन्होंने वहां कहा था ' गांव की स्वच्छता के सवाल को बहुत पहले हल कर लिया जाना चाहिए था। गांधी जी ने स्कूली और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्वच्छता को तुरन्त शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया था। 20 मार्च 1916 को गुरूकुल कांगड़ी में दिये गये भाषाण में उन्होंने कहा था

'गुरूकुल के बच्चों के लिए स्वच्छता और सफाई के नियमों के ज्ञान के साथ ही उनका पालन करना भी प्रशिक्षण का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए, इन अदम्य स्वच्छता निरीक्षकों ने हमें लगातार चेतावनी दी कि स्वच्छता के सम्बन्ध में सब कुछ ठीक नहीं है ..... मुझे लग रहा है कि स्वच्छता पर आगन्तुकों के लिए वार्षिक व्यवहारिक सबक देने के सुनहरे मौके को हमने खो दिया।

गांधी ने रेलवे के तीसरे श्रेणी के डिब्बे में लिखे पत्र के माध्यम से इस ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया था। 25 सितम्बर 1917 को लिखे अपने पत्र में उन्होंने लिखा इस तरह की संकट की स्थिति में तो यात्री परिवहन को बन्द कर देना चाहिए। लेकिन जिस तरह की गंदगी और स्थिति इन डिब्बों में है उसे जारी नहीं रहने दिया जा सकता, क्योंकि वह हमारे स्वास्थ और नैतिकता को प्रभावित करती है। निश्चित तौर पर तीसरी श्रेणी की यात्री को जीवन की बुनियादी जरूरतें हासिल करने का अधिकार तो है ही, तीसरे डिब्बों दर्जे की यात्री की उपेक्षा कर हम लाखों लोगों को व्यवस्था स्वच्छता, शालीन जीवन की शिक्षा देने, शादगी और स्वच्छता की आदतें विकसित करने का बेहतरीन मौका गंवा रहे।

इसी तरह यंग इण्डिया में 3 फरवरी 1927 को उन्होंने बिहार के पवित्र शहर गया की गंदगी के बारे में भी लिखा और यह इंगित किया कि उनकी हिन्दू आत्मा गया के गंदे नालों में फैली गंदगी और बदबू के खिलाफ बगावत करती है।

स्वच्छता शिक्षा एवं गांधी जी

कई लोगों ने गांधी जी को पत्र लिखकर आश्रम में उनके साथ रहने की इच्छा जाहिर की थी। इस बारे में उनकी पहली शर्त होती थी कि आश्रम में रहने वालों की आश्रम की सफाई का काम करना होगा, जिसमें शौच का वैज्ञानिक ढंग से निस्तारण करना भी शामिल है। गांधी जी ने सबका ध्यान इस ओर खींचा, उन्होंने बताया कि हमें पश्चिमी देशों में सफाई रखने के तरीकों को सीखना चाहिए और उनका उसी तरह पालन करना चाहिए। 21 दिसम्बर 1924 को बेलगांव में अपने नागरिक अभिनंदन के जवाब में उन्होंने कहा था, हमें पश्चिम में नगरपालिकाओं द्वारा की जाने वाली सफाई व्यवस्था में सीख लेनी चाहिए, पश्चिमी देशों ने कोरपोरेट स्वच्छता और सफाई विज्ञान किस तरह विकसित किया है उससे हमें काफी कुछ सीखना चाहिए। पीने के पानी के स्रोतों की उपेक्षा जैसे अपराध को रोकना होगा। (गांधी वाङ्मय, भाग–25, पृष्ठ 461)

प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के लिए मसौदा मॉडल नियमों में उन्होंने पंचायत की भूमिका का रेखांकित किया और लिखा, गांव में रहने वाले लोगों के लिए संगठित रूप से सफाई और स्वच्छता के लिए पंचायत जिम्मेदार होनी चाहिए। (गांधी वाङ्मय, भाग–19, पृष्ठ 217)

उनके मन में शिक्षा में स्वच्छता की भूमिका की संकल्पना बहुत स्पष्ट थी । 1933 में उन्होंने लिखा, 'शिक्षा देने के लिए तीन आर का ही ज्ञान होना काफी नहीं है। हरिजन मानवता के लिए अन्य चीजों का भी अर्थ होता है। शिष्टाचार और स्वच्छता का तीनों आर की शिक्षा से पहले अपरिहार्य है।

शहरी मूलभूत सुविधाएं गांवों से पलायन करने, शहरों में आए लोगों तक पहुंच नहीं पाती। उन्होंने फिर 1935 में स्वच्छता की सीख देने का प्रयास किया और लोगों को सफाई के प्रति जागरूक किया। उन्होंने 'हरिजन' के एक अंक में लिखा भी था कि सफाई और स्वच्छता के मामले सिर्फ कहने भर के लिए ही है।

गांधी जी के आश्रम में इस बात पर विशेष जोर दिया जाता था कि स्वच्छता और सफ़ाई के लिए बाहर से किसी को नहीं बुलाया जाना चाहिए। सदस्य स्वयं ही बारी–बारी पूरी सफाई करते करे। आश्रमवासियों को यह ध्यान रखना होता था कि सड़कों और गलियों में पीक या थूक आदि गंदगी नहीं फैलाई जाए। गांधी जी राष्ट्रवादी उत्साह से भरे उन जोशीले और संकल्पबद्ध युवाओं का स्वागत करते थे, जो आश्रम से जुड़ना चाहते थे। लेकिन यह चेतावनी भी देते थे कि उन्हें शौचालय की बाल्टी साफ करने की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी।

गांधी जी ने 'सेवाग्राम आश्रम के नियमों' में कहा कि पानी की बर्बादी नहीं होनी चाहिए। पीने के लिए उबले पानी का उपयोग होना चाहिए है। सड़क पर इधर उधर थूकना या नाक छिनकना नहीं चाहिए।बल्कि इसके लिए अलग जगह पर व्यवस्था हो जहाँ पर लोग चलते नहीं हों।

जनसभाओं एवं नागरिक समारोहों में गांधी जी ने कई छोटे समूहों, स्वयं सेवकों, महिलाओं एवं आश्रमवासियों को संबोधित किया। कई नगरपालिकाओं ने उनका नागरिक अभिनंदन किया। ऐसे अधिकतर अवसरों पर उन्होंने सफाई एवं स्वच्छता की बात की। कांग्रेस के लगभग प्रत्येक बड़े सम्मेलन में गांधी जी अपने भाषण में सफाई का मुद्दा जरूर उठाते थे। गांधी जी के लिए गंदगी बुराई थी। उन्होंने कहा था, बुराईयों की तिकड़ी है– गंदगी, गरीबी और आलस, जिसका सामना आपको करना है और आप झाड़ू, कुनीर तथा अरंडी का तेल और मेरा यकीन करें तो चरखा लेकर उससे लड़ेगें।

गांधी जी ने शहर और नगर पालिकाओं द्वारा किए गए अभिनन्दन समारोहों में अपनी बात रखी और गंदगी की तरफ ध्यान आकर्षित कर सफाई की स्थिति सुधारने का आह्वान किया। वह सफाई के काम को नगर पालिकाओं का सबसे महत्वपूर्ण काम मानते थे। जब कांग्रेस ने नगर पालिका चुनाव में हिस्सा लेने की इच्छा जताई तो उन्होंने सलाह दी कि पार्षद बनने के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं को अच्छा सफाईकर्मी बनना चाहिए।

गांधी जी ने कई पत्र पत्रिकाओं का संपादन किया और उनमें लेख लिखे। उन्होंने नवजीवन और यंग इण्डिया और बाद में हरिजन में सफाई तथा स्वच्छता के बारे में खूब लेख लिखे। देश में गांवों और शहरी बस्तियों में गंदगी की बात उनके दिमाग में थी। खेड़ा सत्याग्रह के दौरान उन्होंने सफाई तथा स्वच्छता के मामले में घरों, तालाबों और खेतों की स्थिति पर नवजीवन में लिखा। उन्हें इस बात की पीड़ा थी कि किसान और उनका परिवार अनभिज्ञता के कारण गंदी और अस्वच्छ स्थितियों में रह रहे हैं। जनवरी 1935 की एक शाम को दिल्ली के सेंट स्टीफंस कालेज के प्रोफेसर विनसर ने एक दर्जन छात्रों के साथ गांधी जी से मुलाकात की, ग्रामीणों को चिकित्सा मदद के बारे में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए गांधी जी ने कहा कि उन्हें बताना चाहिए कि इलाज के बाद की देखभाल के रूप में सफाई और स्वच्छता कितनी महत्वपूर्ण है। मलेरिया की एक हजार गोलियाँ बांटना अच्छा है, लेकिन प्रशंसनीय नहीं है। मल के गड्ढे भरकर गंदा पानी निकालकर कुंओं और टैंकों की सफाई कर बीमारियों से बचने की शिक्षा अधिक प्रशंसनीय होगी। हरिजनों के लिए स्कूल में पढ़ने के बारे में निर्देश मांगे जाने पर गांधी जजी ने सफाई और स्वच्छता के बारे में शिक्षा को प्राथमिकता देने की बात दोहहराई। गांधी जी विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं को सफाई के महत्व के बारे में बताते रहे और उन्हें पहला काम यही करने का सुझाव दिया।

सफाई कर्मचारी एवं गांधी जी के विचार :

गांधी जी को अस्पृश्यता से घृणा थी। गांधी जी जब छोटे थे तो उनके कस्बे में 'उका' नामक एक मेहतर (स्वीपर) मैला ढोने का काम किया करता था। एक बार जब गांधी जी ने उका को छुआ तो उनकी मां पुतलीबाई ने उन्हें डाँटते हुए नहाने को कहा । यद्यपि गांधी, एक विनम्र आज्ञाकारी पुत्र थे किंतु उनको माँ की यह बात पसंद नहीं आयी और 12 साल के बालक ने अपनी मां के साथ बहस करते हुए पूछा कि उका तो हमारी गंदगी की सफाई करके हमारी सेवा करता है, तो उसका स्पर्श मुझे कैसे प्रदूषित कर सकता है? माँ मैं तुम्हारी अवज्ञा नहीं करूंगा, लेकिन रामायण में भी यह वर्णित है कि राम ने एक चांडाल (अछूत मानी जाने वाली जाति), गुहाका, को

गले लगा लिया था। तो आप ही बताइए कि रामायण हमें कैसे ग़लत बात सिखाएगी। पुतलीबाई से पास बालक के तर्क का कोई जवाब नहीं मिल सका। बचपन से बालक मोहन के मन में अपनी मॉ के प्रति स्नेह, सम्मान होने के बावजूद उस छोटी आयु में भी अपनी मॉ की उस बात का विरोध किया जब उनकी मॉ ने सफाई करने वाले कर्मचारी के छूने और उससे दूर रहने के लिए कहा था। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि स्वच्छता और सफाई प्रत्येक व्यक्ति का काम है। वह हाथ से मैला ढोने और किसी एक जाति के लोगों द्वारा ही सफाई करने की प्रथा को समाप्त करना चाहते थे।

उन्होंने भारतीय समाज में सदियों से मौजूद अस्पृश्यता की कुरीति और जातीय प्रथा का विरोध किया। सफाई करने वाले जाति के लोगों को गांवों से बाहर रखा जाता था और उनकी बस्तियां ही खराबए मलीन और गंदगी से भरी हुई थी। समाज में हेय समझे जाने, गरीबी और शिक्षा की कमी की वजह से ऐसी बुरी स्थिति रहते थे। गांधी जी ने उन मलिन बस्तियों में गए और उन्होंने अस्पृश्य समझे जाने वाले लोगों को गले लगाया और अपने साथ गए अन्य नेताओं और कार्यकर्ताओं को भी वैसा करने के लिए कहा। गांधी जी चाहते थे कि उन लोगों की स्थिति सुधरे और वह भी समाज की मुख्यधारा में शामिल हो, उन्होंने पूरे भारत में छात्रों सहित सभी से ऐसी मलिन बस्तियों के लोगों की मदद करने के लिए कहा। गांधी जी ने भारतीय समाज में सफाई करने और मैला ढोने वालों द्वारा किया जाने लगे अमानवीय कार्य के प्रति गहरी पीड़ा थी और इस पर कई अवसरों पर तीखी टिप्पणी भी की। खुले में शौच के लिए आजकल राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय रिपोर्टों में अंग्रेजी में ओपन डेफिकेशन शब्द इस्तेमाल होता है, लेकिन गाांधी जी ने उसके लिए ओपन इवैक्युएशन शब्द का इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा कि शौचालय का प्रयोग नहीं करने और खुले में शौच करने से कई बीमारियां होती है। गांधी जी हरेक अवसर पर सफाई और स्वच्छता के बारे में लिखते रहे, हालांकि वे कभी इस बात से सहमत नहीं हुए, मगर वे समझते थे कि गरीब, बेसहारा एवं दलित वर्ग के लोगों में गंदगी उनके जीवन का एक हिस्सा बना गयी हैं।

1946 से जनवरी 1948 तक उन्होंने सफाई और स्वच्छता की शिक्षा पर और अधिक जोर दिया, क्योंकि आजादी के फौरन बाद शरणार्थी शिविरों में वह जो देख रहे थे, उससे बहुत अधिक विचलित हुए थे। 13 अक्टूबर 1947 को उन्होंने कहा कि शरणार्थी शिविरों में सफाई की समस्या और स्वच्छता की स्थिति को वह बहुत महत्व देते हैं। उन्होंने कहा कि हालांकि भारतीयों को मेले, धार्मिक समारोह और कांग्रेस के सत्र तथा सम्मेलन आयोजित करने का अनुभव है, लेकिन सामान्य जन के रूप में हमें शिविरों के जीवन की आदत नहीं है। भारतीयों में सामाजिक स्वच्छता का भाव नहीं है, जिससे गंदगी खतरनाक स्तर तक पहुंच जाती है और सक्रामक एवं संचारी रोग फैलने का खतरा पैदा हो जाता है। अपनी शहादत से एक दिन पहले 29 जनवरी 1948 को उन्होंने प्रस्तावित लोक सेवक संघ का संविधान तैयार किया। बाद में उसे गांधी जी की अंतिम वसीयत माना गया। इस दस्तावेज में सेवक का छठा काम स्वच्छता था। ग्रामीणों को सफाई और स्वच्छता की शिक्षा देनी होगी और उन्हें खराब सेहत तथा बीमारियों से बचाने के लिए एहतियात के सभी उपाय करने होंगे। सफाई और स्वच्छता गांधी जी के पूरे जीवन में और जीवन के अंत तक प्राथमिकता बनी रही।

भारत में स्वच्छता प्रति समाज और लोगों के में विगत एक दशक में काफ़ी जागरूकता आयी है किंतु अभि भी इसका परिदृश्य निराशाजनक है। सरकार द्वारा इस दिशा में बड़े स्तर पर कई कार्यक्रम और प्रयास किए जा रहे है और उसके सकारात्मक परिणाम भी हमारे सामने आ रहे। पर आशा के अनुरूप देश के हर हिस्से में यह बदलाव नहीं धोतक हो रहे है। यह एक चिंतन का विषय हैं और भारत जैसे विविध संस्कृति, भाषा और क्षेत्र वाले देश में लोगों के अन्दर स्वच्छता के प्रति जागरूकता और आदतों में परिवर्तन एक चुनौती से कम नहीं है। पर जब गांधी जी के विचारो को पढ़ते है तो इस चुनौती के कई उत्तर मिलने लगते है।गांधी जी ने भारतीय समाज को समझा और स्वच्छता के महत्व को समझा। पारंपरिक तौर पर सदियों से सफाई के काम में लगे लोगों को गरिमा प्रदान करने की कोशिश की। आजादी के बाद से हमने उनके अभिमान को योजनाओं में बदल दिया। योजना के लक्ष्यों, ढ़ांचों और संख्याताओं तक सीमित कर दिया गया। जो हमारी बाह्य स्वच्छता के लिए सत्य है, वहीं हमारी आन्तरिक रूप से अस्वच्छ है तो वह हमें भी प्रभाावित करेगा बापू ने स्वच्छता का सबक सिर्फ जनसाधारण को नहीं दिया, अपितु निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र के निकायों में भी स्वच्छता बढ़ाने पर बल दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक संगठन में ऊपर से लेकर नीचे तक प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी है कि वह अपने स्थल के पर्यावरण को गंदा अथवा प्रदूषित न करें। सरकारें और नगर परिषदें कुछ सीमा तक प्रयास कर सकती है। पर उनकी अपनी सीमाएँ होती हैं। यदि हर व्यक्ति इसे अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य समझें, न केवल भारत को एक स्वच्छ राष्ट्र बनाने का लक्ष्य हासिल करना अधिक संभव होगा, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भारतीय स्वच्छ बन पाएंगे और तब वे एक स्वच्छ राष्ट्र, एक स्वच्छ सभ्यता और एक स्वच्छ व्यक्ति होने का उदाहरण बनकर गर्व महसूस कर सकेगें।

निष्कर्ष

गांधी जी के विचारो के आलोक में यदि स्वच्छता के लिए और सकारात्मक कदम उठाने है हमें जनसहभागिता और जन–जागरूकता पर विशेष बल देना होगा और साफ–सफाई के लिए आत्म–प्रेरित प्रयासों को उत्पन्न करने के लिए प्रयास करना चाहिए। स्वच्छता की चिन्ता और जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति को लेनी होगी लेनी होगी क्योंकि मात्र चेतावनियों, कानूनों अथवा अध्यादेश जारी करके इसे हासिल नहीं किया जा सकता। इसे हमें समाज और जीवन संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा और जब ये आम जन की आदत और दायित्वों में शामिल हो जाएगा तब हम यह स्वीकार कर सकते है की हम सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक रूप से शोषण मुक्त, आत्मनिर्भर और सशक्त समाज का हिस्सा

है। स्वच्छ भारत अभियान के परिप्रेक्ष्य में बापू का स्वच्छता दर्शन अत्यन्त प्रासंगिक है। इस अभियान की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम बापू के दिखाए रास्ते पर आगे बढ़े। हम स्वच्छ भारत का लक्ष्य केवल अपनी आत्मा की शुद्धता और इसके बाद अपने आसपास की साफ–सफाई करके ही हासिल कर सकते हैं। यही बापू को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *यंग इण्डिया-10 दिसम्बर, 1925*
2. *यंग इण्डिया-25 अप्रैल 1929*
3. *गांधी वाड्गमय, भाग–4, पृष्ठ 129*
4. *गांधी वाड्मय, भाग–25, पृष्ठ 461*
5. *Anand, Y. P. (n.d.). Cleanliness-Sanitation: Gandhian Movement and Swachh Bharat Abhiyan. Retrieved from Articles on Gandhi-Health website: https://www.mkgandhi.org/articles/cleanliness-sanitation-gandhian-movement-swachh-bharat-abhiyan.html*
6. *Joshi, P. C., & Khattri, P. (2019). On Gandhi and Sanitation. Journal of the Anthropological Survey of India, 68(2), 210–224. https://doi.org/10.1177/2277436x19881247*
7. *Khare, R. S. (2021). M. K. Gandhi, Our Moral Action Compass: His Selected Guiding Communications for the Changing India. Journal of the Anthropological Survey of India, 2277436X20970301. https://doi.org/10.1177/2277436X20970301*
8. *Mahajan, S., & Mahajan, S. (2021). Gandhian thought and mental health – A critique. Indian Journal of Psychiatry, 63(1), 88. https://doi.org/10.4103/psychiatry.IndianJPsychiatry_23_20*
9. *Rathi, S. (n.d.). Importance of Gandhian thoughts about Cleanliness. Retrieved from Gandhi's views website: https://www.mkgandhi.org/articles/gandhian-thoughts-about-cleanliness.html*